में शुद्ध भक्तियोग का दान करने के लिए अवतीर्ण हुए श्री श्रीगौरसुन्दर चैतन्य महाप्रभु की कृपा-किरण से यह अवस्था प्राप्त हो सकती है।

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्।।५५।।

भक्त्या=शुद्धभक्तियोग के द्वारा; **माम्**=मुझे; **अभिजानाति**=जान जाता है; **यावान्**=जिस स्वरूप तथा विभूति (प्रभाव) वाला; **यः च अस्मि**=और जो हूँ; **तत्त्वतः**=तत्त्व से; **ततः**=मेरी भक्ति से; **माम्**=मुझे; **तत्त्वतः**=तत्त्व से; **ज्ञात्वा**=जानकर; **विशते**=प्रवेश करता है; **तदनन्तरम्**=अविलम्ब।

अनुवाद

भक्तियोग के द्वारा ही मुझ पुरुषोत्तम का स्वरूप तत्त्व से जाना जा सकता है। इस प्रकार भक्तियोग द्वारा मुझे पूर्णरूप से जानने वाला तुरन्त वैकुण्ठ-जगत् में प्रवेश कर जाता है।।५५।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् और उनके अंशों को **मनोधर्मी** अथवा अभक्त नहीं जान सकते। यदि कोई श्रीभगवान् के तत्त्व को जानने का अभिलाषी हो, तो उसे शुद्धभक्त के आश्रय में शुद्ध भक्तियोग के परायण होना होगा। अन्यथा भगवत्-तत्त्व सदा अगोचर ही रहेगा। पूर्व में कहा जा चुका है—**नाहं प्रकाशः** अर्थात् श्रीभगवान् सब के आगे प्रकट नहीं होते। केवल प्रकाण्ड पाण्डित्य अथवा मनोधर्मी के द्वारा उन्हें कोई नहीं जान सकता। जो यथार्थ में कृष्णभावना और भक्तियोग के परायण है, वही श्रीकृष्ण के तत्त्व को जान सकता है। इस विषय में विश्वविद्यालय की उपाधियाँ निरर्थक हैं।

श्रीकृष्णतत्त्व का पूर्ण मर्मज्ञ श्रीकृष्ण के दिव्य धाम में प्रवेश का अधिकारी हो जाता है। ब्रह्मभूत होने का अर्थ यह नहीं कि जीव का अपना स्वरूप नष्ट यो जाता है। यहाँ ब्रह्मभूत पुरुष को भक्तियोग के परायण बतलाया है; अतः इस अवस्था में भी भगवान्, भक्त और भक्ति का अपना-अपना अस्तित्व रहता है। यह ज्ञान मुक्ति के बाद भी कभी निरस्त नहीं होता। मुक्ति का अर्थ देहात्मबुद्धि से मुक्त होना है। मुक्तावस्था में भी वही भेद रहता है, जीव का वही अपना स्वरूप रहता है। अन्तर केवल इतना है कि मुक्त जीव पूर्णरूप से शुद्ध कृष्णभावना से भावित हो जाता है। भ्रम से यह नहीं समझना चाहिए कि **विशते** (मुझ में प्रवेश करता है) शब्द अद्वैतवादियों के उस मत का समर्थक है, जिसके अनुसार मुक्त जीव का निर्विशेष ब्रह्म से अभेद हो जाता है। वास्तव में ऐसा नहीं है। **विशते** का अर्थ श्रीभगवान् का संग और सेवन करने के लिए जीव का अपने स्वरूप से भगवद्धाम में प्रवेश करना है। उदाहरणार्थ, एक हरा पक्षी एक हरे वृक्ष में फल खाने के लिए ही प्रवेश करता है, वृक्ष से एक हो जाने के लिए नहीं। निर्विशेषवादी प्रायः बहती नदी के सागर में लीन हो जाने का उदाहरण देते हैं। निर्विशेषवादी के लिए यह आनन्द का विषय हो सकता